International Journal of Financial Management and Economics

P-ISSN: 2617-9210
E-ISSN: 2617-9229
IJFME 2024; 7(2): 738-741
www.theeconomicsjournal.com
Received: 06-06-2024
Accepted: 10-07-2024

रजनी सारथी
शोध छात्रा, सहायक प्राध्यापक (अर्थषास्त्र), राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बिकापुर, जिला सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author:
रजनी सारथी
शोध छात्रा, सहायक प्राध्यापक (अर्थषास्त्र), राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बिकापुर, जिला सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

छत्तीसगढ़ में धान की खेती एवं कृषकों का आर्थिक विकास

रजनी सारथी

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26179210.2024.v7.i2.486

प्रस्तावना
महात्मा गाँधी ने कहा था – ''भारत गाँवों का देश है और कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।'' भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। अतः कृषि का विकास अत्यंत आवश्यक है ताकि देश का विकास हो सके। किसी भी देश के कृषि व्यवस्था की उत्पादन क्षमता सीमित हो जाए, फिर देश अनेक प्रयास से भी विकास नहीं कर सकता है।

धान के फसलों की विशेषताएं
1. मनसून (जून–जूलाई माह) में बोई जाती है।
2. वर्ष में दो से तीन फसल ली जा सकती है।
3. छत्तीसगढ़ की मुख्य फसल धान है।
4. छत्तीसगढ़ राज्य को ''धान का कटोरा'' कहते है। यहाँ कई प्रकार के धान की कृषि की जाती है। जिसमें परंपरागत तथा हाईब्रिड दोनों प्रकार के इसमे शामिल है। धान मुख्य खरीफ फसल है। छत्तीसगढ़ के अन्तर्गत धान के फसलों का क्षेत्रफल तथा उत्पादन मे वृद्धि को देखा जा सकता है।

सरगुजा जिले में मुख्यत
धान का उत्पादन किया जाता है। इसके अलावा अन्य फसलों का भी उत्पादन किया जाता है। जिले में श्री–अन्न का भी उत्पादन किया जाता है। जैसे– ज्वारा, कोदो, कुटकी, रागी। जिले मे फसलवार बोया गया क्षेत्र हेक्टर मे क्षेत्रफल का विवरण इस प्रकार है–

सारणी 1: वर्ष 2019–20, 2021–22 में (इकाई क्विंटल में)

क्र.	फसल का प्रकार	क्षेत्रफल (हेक्टर) 2019–20	क्षेत्रफल (हेक्टर) 2021–22	क्र.	फसल का प्रकार	क्षेत्रफल (हेक्टर) 2019–20	क्षेत्रफल (हेक्टर) 2021–22
1	धान	115066	115588	9	लाख तिवड़ा	16	11
2	गेहूँ	5913	5604	10	गन्ना	2887	3201
3	ज्वार	47	39	11	अलसी	2511	2237
4	मक्का	10367	12031	12	सोयाबीन	3	0
5	कोदो कुटकी	39	115	13	तिल	225	281
6	चना	1362	1149	14	मूँगफली	2255	2061
7	तुअर	3425	3300	15	रामतिल	5080	2864
8	उड़द	4649	4550	16	राई एवं सरसों	4610	4169
कुल बोया गया क्षेत्र						158455	157200

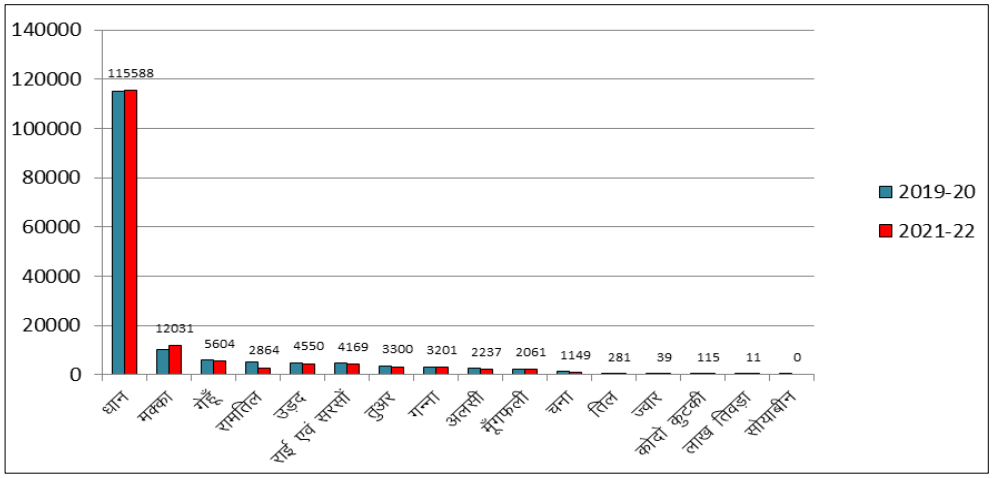

ग्राफ 1: जिले मे फसलवार बोया गया क्षेत्र हेक्टर मे

सरगुजा जिले में फसलों की पैदावार निम्नानुसार सारणी–2 मे परिलक्षित है

सारणी 2: जिला सरगुजा प्रमुख फसलों का उत्पादन

क्र	तहसील का नाम	धान	गेहू	ज्वार	मक्का	कोदो कुटकी	चना	तुअर	उड़द
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1	अम्बिकापुर	11427	976	4	1177	0	307	271	352
2	लखनपुर	19651	650	0	1591	8	171	485	978
3	उदयपुर	11884	253	4	1201	86	75	222	639
4	लुन्ड्रा	17435	1575	10	4107	4	178	471	411
5	सीतापुर	19666	321	0	980	0	49	508	798
6	बतौली	12379	548	7	1247	2	71	571	612
7	मैनपाट	11825	307	4	936	15	26	440	341
8	दरिमा	11321	974	4	792	0	272	332	419
9	जिला सरगुजा	115588	5604	33	12031	15	1149	3300	4550

क्र	तहसील का नाम	लाख तिवड़	गन्ना	सोयाबीन	तिल	मूँगफली	रामतिल	राई एवं सरसों
(1)	(2)	(11)	(12)	(13)	(14)	(15)	(16)	(17)
1	अम्बिकापुर	1	92	0	13	74	253	308
2	लखनपुर	4	56	0	112	256	209	426
3	उदयपुर	3	29	0	52	217	275	150
4	लुन्ड्रा	0	1555	0	35	139	165	1674
5	सीतापुर	0	194	0	19	607	500	133
6	बतौली	0	1003	0	2	306	506	341
7	मैनपाट	0	137	0	7	342	623	661
8	दरिमा	3	135	0	41	120	333	476
9	जिला सरगुजा	11	3201	0	281	2061	2864	4169

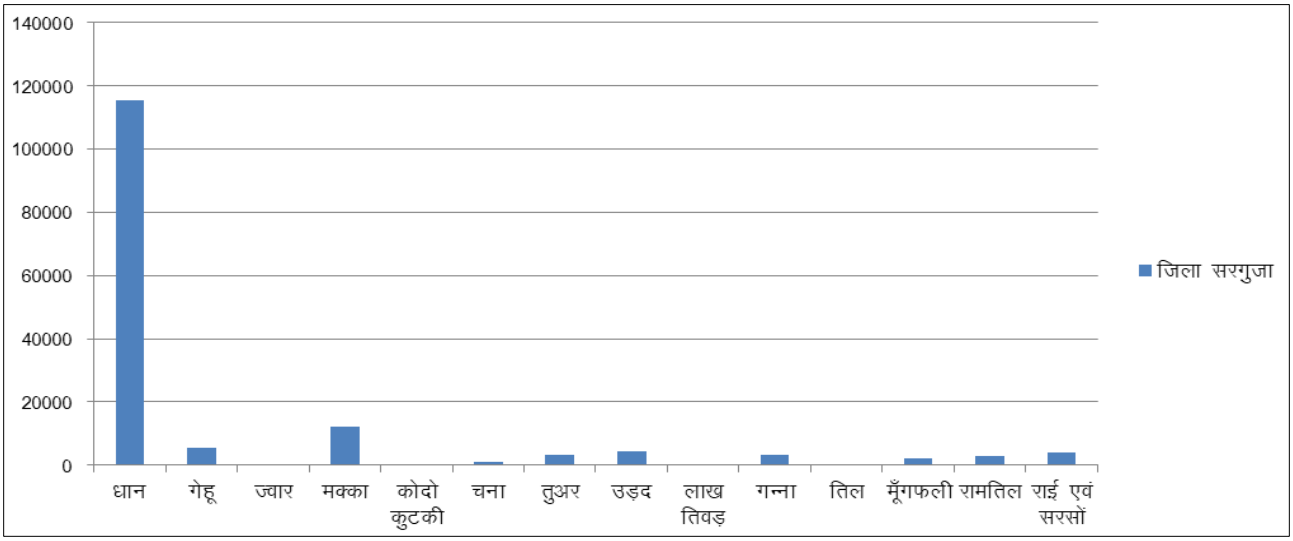

ग्राफ 2: जिला सरगुजा प्रमुख फसलों का उत्पादन

सारणी 3: उत्पादन कि.ग्रा./हेक्टेयर मे

पंचवर्षीय योजना	क्षेत्रफल		उत्पादन		उत्पादकता	
	मिलियन हेक्टेयर	प्रतिशत वृद्धि पूर्व वर्ष की योजनाओं से	मिलियन टन	प्रतिशत वृद्धि पूर्व वर्ष की योजनाओं से	कि. ग्रा. / हेक्टेयर	प्रतिशत वृद्धि पूर्व वर्ष की योजनाओं से
प्रथम योजना 1951–52 से 1955–56	30.68	–	25.03	–	816	–
द्वितीय योजना 1956–57 से 1960–61	33.14	8	30.34	21.2	915	121
तृतीय योजना 1961–62 से 1965–66	35.62	7.5	35.15	15.9	987	7.9
वर्षिक योजना						
1966–67	35.25	–	30.44	–	863	–
1967–68	36.44	–	37.61	–	1032	–
1968–69	36.97	–	39.76	–	1076	–
चतुर्थ योजना 1974–75 से 1973–74	37.60	5.6	41.80	18.90	1112	12.7
पंचम योजना 1974–75 से 1978–79	39.33	4.6	47.34	13.3	1204	8.3
वर्षिक योजना						
1979–80	39.42	–	42.33	–	1074	–
छठी योजना 1980–81 से 1984–85	40.30	2.5	54.49	15.1	1352	12.3
सातवीं योजना 1985–86 से 1989–90	41.00	1.7	65.05	19.40	1587	17.4
वर्षिक योजना						
1990–91	42.69	–	74.29	–	1740	–
1991–92	42.65	–	74.68	–	1751	–
आठवीं योजना 1992–93 से 1996–97	42.68	4.1	78.74	21.0	1845	16.3
नौवी योजना 1997–98 से 2001–02	44.60	4.5	87.32	10.9	1958	6.2
दसवीं योजना 2002–03 से 2006–07	42.63	–4.4	85.73	–1.8	2011	2.7
ग्यारवीं योजना 2007–08 से 2010–11	42.06	–1.3	91.75	7.02	20164	7.6

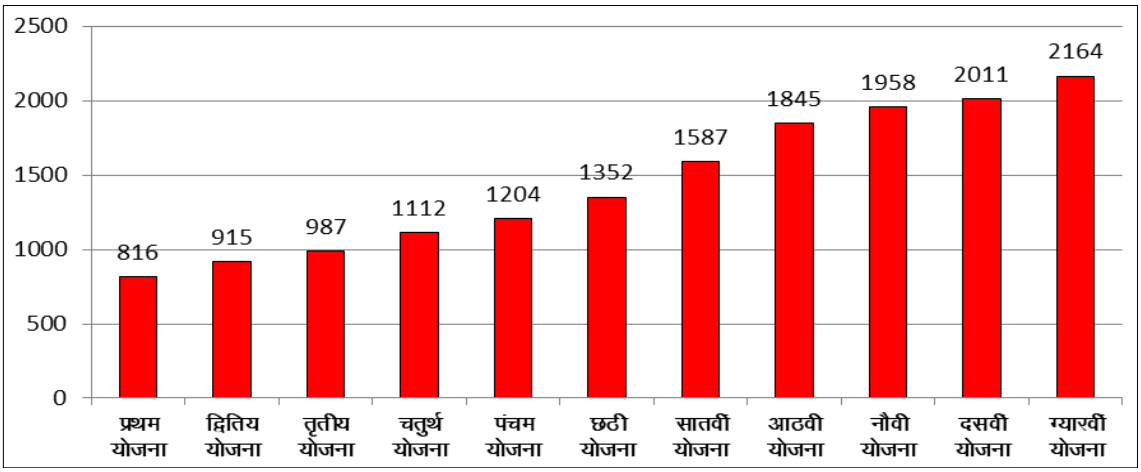

ग्राफ 3: उत्पादन कि.ग्रा./हेक्टेयर मे

छत्तीसगढ़ में खरीफ फसलों का स्वर्णिम इतिहास इसलिए हैं, क्योंकि छत्तीसगढ़ के कई जिलें सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आते है। खरीफ के अन्तर्गत कपास का उत्पादन, बिलासपुर, रायपुर, बेमेतरा, आदि जिलों में किया जाता है, जो कि एक व्यावसायिक फसल है। जिससे कृषकों के जीवन स्तर में सुधार संभव हुआ है। ज्वार, बाजरा जैसे खाद्यान्नों का महत्व भी निरन्तर बढ़ता जा रहा है, जिसमें अनेकों पौष्टिक तत्व पाए जाते है।

उद्देश्य

1) सरगुजा जिले में धान उत्पादन की वर्तमान स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।
2) सरगुजा जिले में धान उत्पादन के उन्नत तकनीक के संभावनाओं की जानकारी प्राप्त करना।
3) धान की उन्नत किस्मों की कृषि में नवीन तकनीक के प्रयोग की जानकारी प्राप्त करना।
4) सरगुजा जिले की अर्थव्यवस्था पर धान के उत्पादन पर तकनीकी परिवर्तन के प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना।
5) धान का उत्पादन बढ़ाने के लिए किए गए प्रयासों का अध्ययन करना।
6) उन समस्याओं एवं कारणों का परीक्षण करना जो धान के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

परिकल्पना–प्रस्तुत शोध कार्य की परिकल्पना निम्नानुसार है

1. सरगुजा मे मुख्य रूप से खरीफ फसलों में धान का उत्पादन किया जाता है।
2. खरीफ फसलों के उत्पादन से ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रगति कर रही है।
3. खरीफ फसलों के उत्पादन मे निरंतर वृद्धि हो रही है।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित अध्ययन में अनुसंधान प्रद्धति का प्रयोग मुख्यतः राज्य, विकासखंड, ग्राम चयन तथा समंको के चयन के साथ–साथ विश्लेषण का ढाँचा तैयार करने और धान के लागत, विपणन व प्रसंस्करण को प्रभावित करने वाले कारकों के परीक्षण के लिये

किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में जिला एवं विकासखंड का चयन सविचार निदर्शन द्वारा किया गया है।

अ. स्त्रोत

धान के उन्नत तकनीक के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए कृषकों, ग्राम स्तर पर आवश्यक संमकों का संकलन पटवारी एवं ग्राम सेवक से और कृषि विस्तार अधिकारी के कार्यालय से प्राप्त किया गया। विकास खण्ड संबंधी जानकारी विकास खण्ड कार्यलय सरगुजा से प्राप्त किया गया। जिला स्तर पर आवश्यक जानकारी अधीक्षक, भू–अभिलेख के कार्यालय से, ''जिला सांख्यिकी हस्त पुस्तिका'' व ''जनगणना रिपोर्ट 2011'' से प्राप्त किये गये।

ब. समंकों का चयन

प्राथमिक सूचनाओं के साथ–साथ द्वितीय सूचनाओं को भी एकत्र किया गया है। द्वितीय सूचनाए पत्र पत्रिका लेख पटवारी से एवं प्रथमिक सूचनाए प्रत्यच्क्ष साक्षत्कार विधि से एकत्र की गई है। (परिशिष्ट क्रमांक–1)

स. प्राथमिक सूचनायें से संबंधित बिन्दु

1) सामान्य जानकारी
2) कृषि भूमि की जानकारी
3) धान की प्रजाति की जानकारी
4) धान की फसल लगाने से पूर्व भूमि उपचार संबंधी जानकारी
5) धान की फसल लगाने के बाद फसल उपचार एवं कीट प्रबन्धन संबंधी जानकारी
6) अन्य जानकारी

द. जिला, विकासखण्ड, ग्रामों एवं कृषकों का चयन

जिला का चयन – सरगुजा

ग्रामों का चयन – सरगुजा जिले के लगभग 10 ग्रामों का चयन किया गया है जिनके नाम है– अमेरा, कुन्दीकला, करजी/सखोली, गेरसा, दरिमा, निम्हा/नीमहा, बतौली/खड़धोवा, मेन्ड्राकला, सुखरी और सीतापुर।

कृषको का चयन

प्रत्येक ग्राम से 4 छोटे जोत, 3 मध्यम जोत व 3 बड़े जोत के आधार कुल 10 किसानों का चयन किया गया है। अर्थात् प्रत्येक ग्राम से कुल 10 किसानों का चयन अध्ययन के लिए लिया गया है।

य. विश्लेषण विधि

विश्लेष्ण हेतु ''कॉब–डगलस उत्पादन फंक्शन'' विधि का प्रयोग किया है। जिसे अर्थशास्त्री ''पॉल डगलस'' और गणितज्ञ ''चार्ल्स कोब'' द्वारा 1927 के दशक मे विकसित किया गया था जो भौतिक पूँजी और श्रम के बीच संबंधों का वर्णन करता है

$$Q = AL^{\alpha}K^{\beta}$$

Q = कुल उत्पादन

L = कुल श्रम

K = पूँजी

A = कुल कारक उत्पादकता

Y = कुल उत्पादन

शोध क्षेत्र

अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले का चयन किया गया है। सरगुजा के पाँच विकास खण्ड़ के प्रत्येक से 20 ग्राम से कुल 100 कृषकों से खरीफ फसल संबंधित ऑकड़े प्राप्त किये गये है।

परिकल्पना परिक्षण

परिकल्पना ः1रू ः2रू और ः2रू परीक्षण पश्चात् धनात्मक पायी गई। अतः परिकल्पना सही है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि सरगुजा जिले में खरीफ फसलों की उत्पादन में निरंतर वृद्धि हुई है। जिससे सरगुजा जिले की अर्थव्यवस्था का विकास हुआ है।

कृषि छत्तीसगढ़ की ही नहीं अपितु भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, यह अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। छ.ग. में धान का उत्पादन तथा क्षेत्रफल दोनों अधिक है, इसलिए छ.ग. को धान का कटोरा कहा जाता है। यहाँ की संस्कृति तथा परम्परा में भी धान का महत्वपूर्ण स्थान है। धान छ.ग. की ही नहीं अपितु भारत की अधिकांश जनसंख्या का मुख्य भोजन है।

सरगुजा जिले की अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कृषिकी नवीन विधियों की खोज की जा रही है, ताकि अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके, इसके लिये नवीन तकनीक खाद, उर्वरक एवं बीजों के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण उनन्त बीजों का प्रयोग है। उन्नत बीजों के प्रयोग से परंपरागत् बीजों की तुलना में 15 से 20 प्रतिशत अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

सुझाव

सरगुजा जिले मे वर्तमान में खरीफ फसलों के उत्पादन मे वृद्धि हुई है, किन्तु इसमें और वृद्धि की संभावनाऐं विद्यमान है। इसे हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते है–

1. कृषि उत्पादन की उन्नत तकनीक के प्रयोग पर बल देना चाहिए।
2. प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि का प्रयास करना चाहिए।
3. फसल बीमा को और प्रचलित करना चाहिए, ताकि कृषि संबंधित नुकसान को कम से कम किया जा सकें।
4. सिंचाई के पर्याप्त साधनों का विकास करना चाहिए ताकि विविधीकरण द्वारा फसल के उत्पादन में वृद्धि हो सकें।

संदर्भ

1. जिला सांख्यिकी पुस्तिका जिला–सरगुजा वर्ष–2020
2. जिला सांख्यिकी पुस्तिका जिला–सरगुजा वर्ष–2022
3. बीज निगम सरगुजा। में कृषि संबंधित उपलब्ध आँकड़े।
4. आई सी.एस.आर. हैदराबाद। में कृषि संबंधित उपलब्ध आँकड़े।
5. मौसम विभाग रायपुर, भोपाल में कृषि संबंधित उपलब्ध आँकड़े।
6. जिला सांख्यिकीय कार्यालय कलेक्ट्रेट, सरगुजा में कृषि संबंधित उपलब्ध आँकड़ैं
7. रंजना शर्मा, ''छत्तीसगढ़ की प्रमुख फसलों की उत्पादन प्रवृत्ति का सामयिक एवं स्थानिक विश्लेषण (1960–61 से 1994–95)'', पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, 2002